



Manoj kumar Agrawal

17 Dec 1969

04:34 PM

Saraipali

Model: Web-MyKundli

Order No: 119914701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 17/12/1969
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 16:34:00 घंटे
इष्ट _____: 25:12:28 घटी
स्थान _____: Saraipali
राज्य _____: Chhattisgarh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:20:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:02:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:36:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:58 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:19:36 घंटे
सूर्योदय _____: 06:29:00 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:19:04 घंटे
दिनमान _____: 10:50:04 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 01:54:37 धनु
लग्न के अंश _____: 22:05:11 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: वरियान
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दे-देवांशु
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1891	मार्गशीर्ष	26
पंजाबी	संवत : 2026	पौष	3
बंगाली	सन् : 1376	पौष	2
तमिल	संवत : 2026	मार्गड़ी	2
केरल	कोल्लम : 1145	धनु	2
नेपाली	संवत : 2026	पौष	3
चैत्रादि	संवत : 2026	मार्गशीर्ष	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2026	मार्गशीर्ष	शुक्ल 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:30:41
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:33:23 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 08:42:26 घंटे
जन्म योग _____ : वरियान
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 17:30:41 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 12:31:33
भभोग _____ : 60:54:47
भोग्य दशा काल _____ : बुध 13 वर्ष 5 मा 21 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

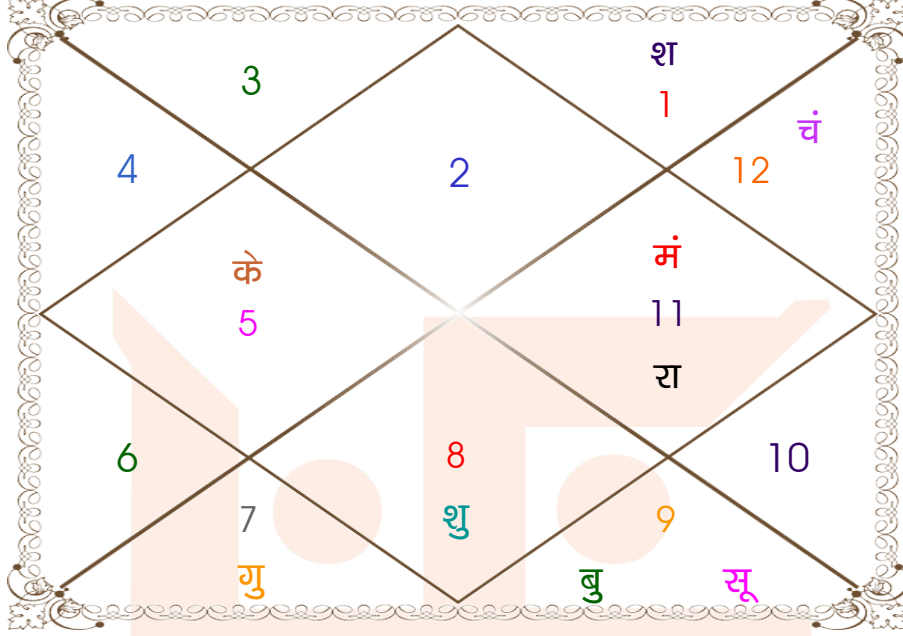
D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

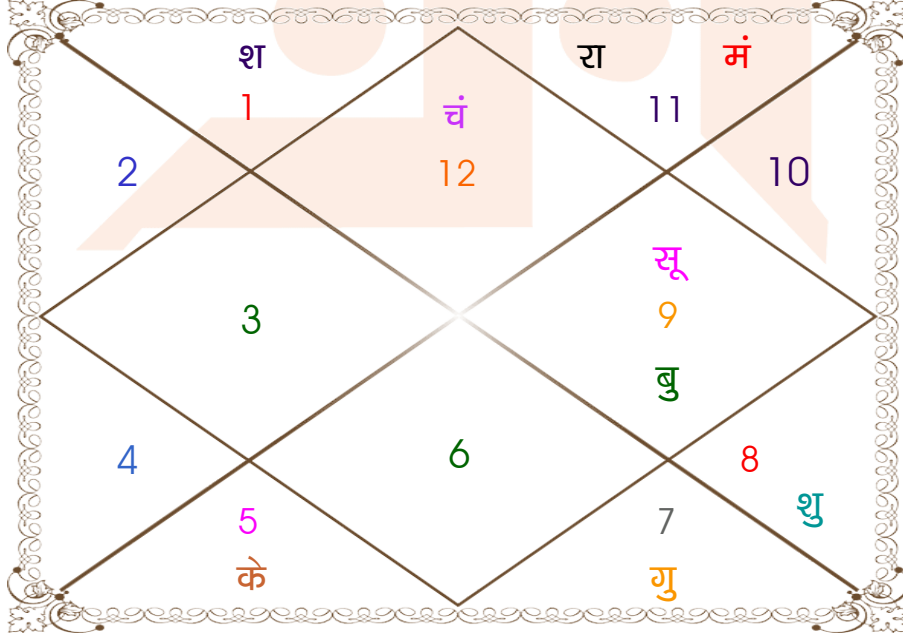
Vibhaasharma.av@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

चं	श	ल	
रा मं			
			के
बु सू	शु	गु	

लग्न कुंडली

ल	श	चं	रा मं
के			सू बु
	गु	शु	

विंशोत्तरी
बुध 13वर्ष 5मा 21दि
बुध

17/12/1969

09/06/2086

बुध	09/06/1983
केतु	09/06/1990
शुक्र	09/06/2010
सूर्य	09/06/2016
चन्द्र	09/06/2026
मंगल	09/06/2033
राहु	09/06/2051
गुरु	09/06/2067
शनि	09/06/2086

योगिनी
उल्का 4वर्ष 9मा 2दि
मंगला

19/09/2025

19/09/2026

मंगला	29/09/2025
पिंगला	20/10/2025
धान्या	19/11/2025
भ्रामरी	30/12/2025
भद्रिका	18/02/2026
उल्का	20/04/2026
सिद्धा	30/06/2026
संकटा	19/09/2026

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

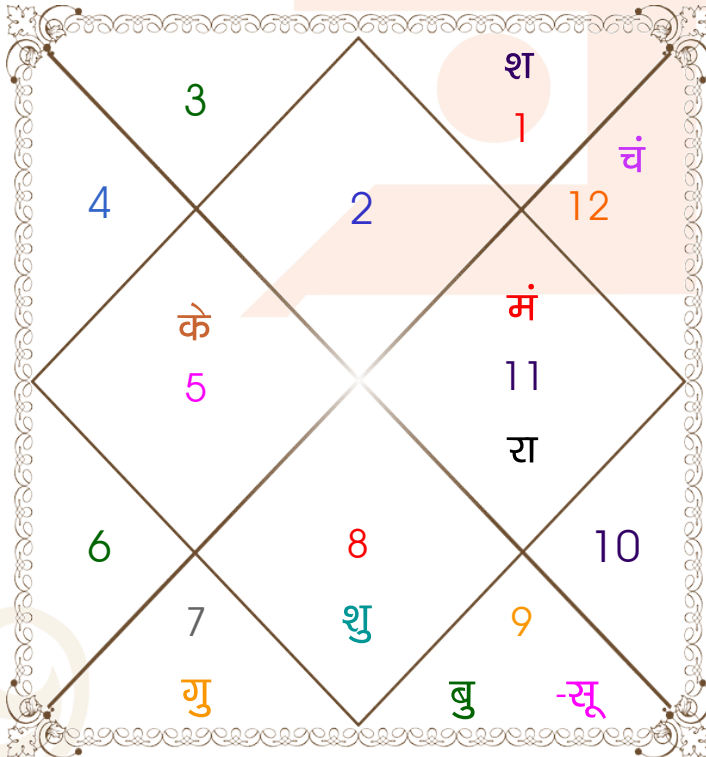
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	22:05:11	351:07:06	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			धनु	01:54:37	01:01:04	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			मीन	19:25:50	13:12:39	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
मंगल			कुंभ	07:57:02	00:44:45	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	सम राशि
बुध			धनु	18:31:41	01:28:30	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
गुरु			तुला	06:41:34	00:09:50	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			वृश्चि	22:43:22	01:15:29	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	सम राशि
शनि	व		मेष	08:53:43	00:01:54	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	नीच राशि
राहु	व		कुंभ	22:20:21	00:01:37	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	22:20:21	00:01:37	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			कन्या	15:00:56	00:01:29	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
नेप			वृश्चि	05:58:20	00:02:05	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	---
प्लूटो			कन्या	03:54:25	00:00:26	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			कुंभ	09:30:48	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	गुरु	--

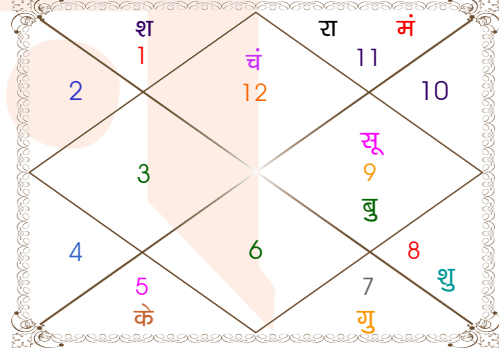
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:19

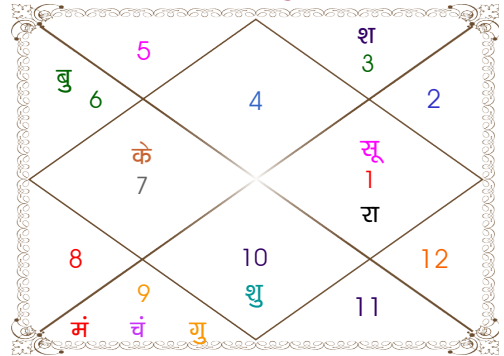
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 04:59:27	वृष 22:05:11
2	मिथुन 04:59:27	मिथुन 17:53:43
3	कर्क 00:47:59	कर्क 13:42:16
4	कर्क 26:36:32	सिंह 09:30:48
5	सिंह 26:36:32	कन्या 13:42:16
6	तुला 00:47:59	तुला 17:53:43
7	वृश्चिक 04:59:27	वृश्चिक 22:05:11
8	धनु 04:59:27	धनु 17:53:43
9	मकर 00:47:59	मकर 13:42:16
10	मकर 26:36:32	कुम्भ 09:30:48
11	कुम्भ 26:36:32	मीन 13:42:16
12	मेघ 00:47:59	मेघ 17:53:43

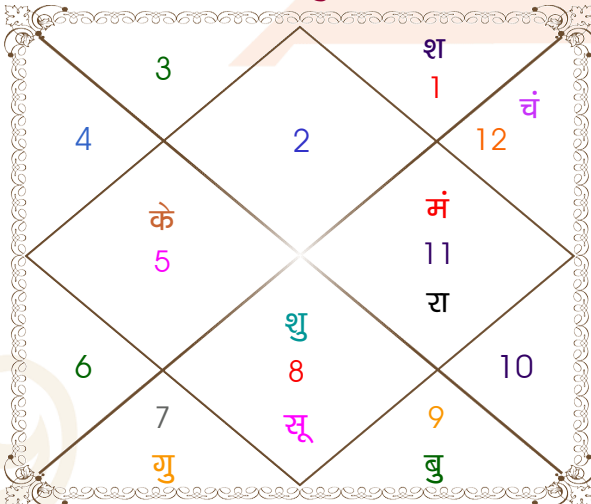
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष 22:05:11	
2	मिथुन 16:55:35	
3	कर्क 11:40:55	
4	सिंह 09:30:48	
5	कन्या 12:13:09	
6	तुला 17:58:23	
7	वृश्चिक 22:05:11	
8	धनु 16:55:35	
9	मकर 11:40:55	
10	कुम्भ 09:30:48	
11	मीन 12:13:09	
12	मेघ 17:58:23	

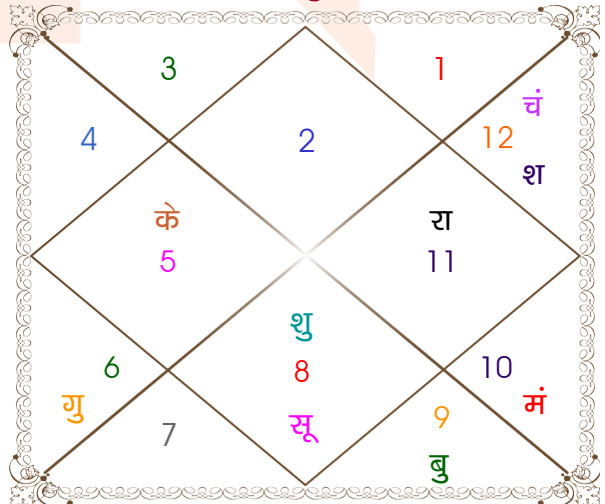
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 13 वर्ष 5 मास 21 दिन

बुध 17 वर्ष 17/12/1969 09/06/1983	केतु 7 वर्ष 09/06/1983 09/06/1990	शुक्र 20 वर्ष 09/06/1990 09/06/2010	सूर्य 6 वर्ष 09/06/2010 09/06/2016	चंद्र 10 वर्ष 09/06/2016 09/06/2026
00/00/0000	केतु 05/11/1983	शुक्र 09/10/1993	सूर्य 27/09/2010	चंद्र 09/04/2017
17/12/1969	शुक्र 05/01/1985	सूर्य 09/10/1994	चंद्र 28/03/2011	मंगल 08/11/2017
शुक्र 02/09/1972	सूर्य 12/05/1985	चंद्र 09/06/1996	मंगल 03/08/2011	राहु 10/05/2019
सूर्य 09/07/1973	चंद्र 11/12/1985	मंगल 09/08/1997	राहु 27/06/2012	गुरु 08/09/2020
चंद्र 09/12/1974	मंगल 10/05/1986	राहु 08/08/2000	गुरु 15/04/2013	शनि 09/04/2022
मंगल 06/12/1975	राहु 28/05/1987	गुरु 09/04/2003	शनि 28/03/2014	बुध 09/09/2023
राहु 24/06/1978	गुरु 03/05/1988	शनि 09/06/2006	बुध 01/02/2015	केतु 09/04/2024
गुरु 29/09/1980	शनि 12/06/1989	बुध 09/04/2009	केतु 09/06/2015	शुक्र 08/12/2025
शनि 09/06/1983	बुध 09/06/1990	केतु 09/06/2010	शुक्र 09/06/2016	सूर्य 09/06/2026
मंगल 7 वर्ष 09/06/2026 09/06/2033	राहु 18 वर्ष 09/06/2033 09/06/2051	गुरु 16 वर्ष 09/06/2051 09/06/2067	शनि 19 वर्ष 09/06/2067 09/06/2086	बुध 17 वर्ष 09/06/2086 00/00/0000
मंगल 05/11/2026	राहु 20/02/2036	गुरु 28/07/2053	शनि 12/06/2070	बुध 05/11/2088
राहु 24/11/2027	गुरु 16/07/2038	शनि 08/02/2056	बुध 19/02/2073	केतु 02/11/2089
गुरु 30/10/2028	शनि 22/05/2041	बुध 16/05/2058	केतु 31/03/2074	शुक्र 17/12/2089
शनि 08/12/2029	बुध 09/12/2043	केतु 22/04/2059	शुक्र 31/05/2077	00/00/0000
बुध 06/12/2030	केतु 26/12/2044	शुक्र 21/12/2061	सूर्य 13/05/2078	00/00/0000
केतु 04/05/2031	शुक्र 27/12/2047	सूर्य 09/10/2062	चंद्र 12/12/2079	00/00/0000
शुक्र 03/07/2032	सूर्य 20/11/2048	चंद्र 08/02/2064	मंगल 20/01/2081	00/00/0000
सूर्य 08/11/2032	चंद्र 22/05/2050	मंगल 14/01/2065	राहु 27/11/2083	00/00/0000
चंद्र 09/06/2033	मंगल 09/06/2051	राहु 09/06/2067	गुरु 09/06/2086	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 13 वर्ष 6 मा 2 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र 09/04/2024 08/12/2025	चंद्र - सूर्य 08/12/2025 09/06/2026	मंगल - मंगल 09/06/2026 05/11/2026	मंगल - राहु 05/11/2026 24/11/2027	मंगल - गुरु 24/11/2027 30/10/2028
शुक्र 19/07/2024 सूर्य 19/08/2024 चंद्र 08/10/2024 मंगल 13/11/2024 राहु 12/02/2025 गुरु 04/05/2025 शनि 09/08/2025 बुध 03/11/2025 केतु 08/12/2025	सूर्य 18/12/2025 चंद्र 02/01/2026 मंगल 12/01/2026 राहु 09/02/2026 गुरु 05/03/2026 शनि 03/04/2026 बुध 29/04/2026 केतु 10/05/2026 शुक्र 09/06/2026	मंगल 18/06/2026 राहु 10/07/2026 गुरु 30/07/2026 शनि 23/08/2026 बुध 13/09/2026 केतु 21/09/2026 शुक्र 16/10/2026 सूर्य 24/10/2026 चंद्र 05/11/2026	राहु 02/01/2027 गुरु 22/02/2027 शनि 24/04/2027 बुध 17/06/2027 केतु 09/07/2027 शुक्र 11/09/2027 सूर्य 30/09/2027 चंद्र 01/11/2027 मंगल 24/11/2027	गुरु 08/01/2028 शनि 02/03/2028 बुध 19/04/2028 केतु 09/05/2028 शुक्र 05/07/2028 सूर्य 22/07/2028 चंद्र 20/08/2028 मंगल 08/09/2028 राहु 30/10/2028
मंगल - शनि 30/10/2028 08/12/2029	मंगल - बुध 08/12/2029 06/12/2030	मंगल - केतु 06/12/2030 04/05/2031	मंगल - शुक्र 04/05/2031 03/07/2032	मंगल - सूर्य 03/07/2032 08/11/2032
शनि 02/01/2029 बुध 28/02/2029 केतु 24/03/2029 शुक्र 30/05/2029 सूर्य 19/06/2029 चंद्र 23/07/2029 मंगल 16/08/2029 राहु 15/10/2029 गुरु 08/12/2029	बुध 29/01/2030 केतु 19/02/2030 शुक्र 20/04/2030 सूर्य 08/05/2030 चंद्र 08/06/2030 मंगल 29/06/2030 राहु 22/08/2030 गुरु 09/10/2030 शनि 06/12/2030	केतु 14/12/2030 शुक्र 08/01/2031 सूर्य 16/01/2031 चंद्र 28/01/2031 मंगल 06/02/2031 राहु 28/02/2031 गुरु 20/03/2031 शनि 13/04/2031 बुध 04/05/2031	शुक्र 14/07/2031 सूर्य 04/08/2031 चंद्र 09/09/2031 मंगल 03/10/2031 राहु 06/12/2031 गुरु 01/02/2032 शनि 09/04/2032 बुध 08/06/2032 केतु 03/07/2032	सूर्य 09/07/2032 चंद्र 20/07/2032 मंगल 27/07/2032 राहु 16/08/2032 गुरु 02/09/2032 शनि 22/09/2032 बुध 10/10/2032 केतु 17/10/2032 शुक्र 08/11/2032
मंगल - चंद्र 08/11/2032 09/06/2033	राहु - राहु 09/06/2033 20/02/2036	राहु - गुरु 20/02/2036 16/07/2038	राहु - शनि 16/07/2038 22/05/2041	राहु - बुध 22/05/2041 09/12/2043
चंद्र 25/11/2032 मंगल 08/12/2032 राहु 09/01/2033 गुरु 06/02/2033 शनि 12/03/2033 बुध 11/04/2033 केतु 24/04/2033 शुक्र 29/05/2033 सूर्य 09/06/2033	राहु 04/11/2033 गुरु 15/03/2034 शनि 18/08/2034 बुध 05/01/2035 केतु 04/03/2035 शुक्र 15/08/2035 सूर्य 03/10/2035 चंद्र 24/12/2035 मंगल 20/02/2036	गुरु 16/06/2036 शनि 02/11/2036 बुध 06/03/2037 केतु 26/04/2037 शुक्र 19/09/2037 सूर्य 02/11/2037 चंद्र 14/01/2038 मंगल 06/03/2038 राहु 16/07/2038	शनि 27/12/2038 बुध 24/05/2039 केतु 24/07/2039 शुक्र 13/01/2040 सूर्य 05/03/2040 चंद्र 31/05/2040 मंगल 31/07/2040 राहु 03/01/2041 गुरु 22/05/2041	बुध 30/09/2041 केतु 24/11/2041 शुक्र 28/04/2042 सूर्य 14/06/2042 चंद्र 30/08/2042 मंगल 24/10/2042 राहु 12/03/2043 गुरु 14/07/2043 शनि 09/12/2043

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

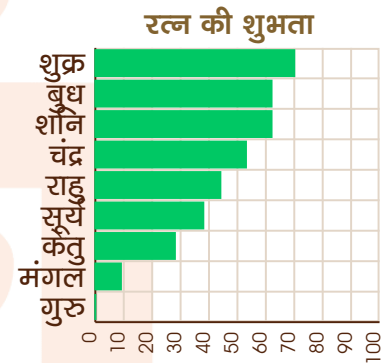
मूलांक	8
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 2, 8, 9
शत्रु अंक	3, 7,
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	70%	दम्पति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	62%	दुर्घटना से बचाव, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	62%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	53%	धनार्जन, पराक्रम
गोमेद	राहु	44%	व्यावसायिक हानि, व्यय
माणिक्य	सूर्य	38%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	28%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	9%	व्यावसायिक हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुखराज	गुरु	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	09/06/1983	50%	31%	9%	75%	0%	77%	62%	44%	28%
केतु	09/06/1990	12%	31%	22%	62%	0%	77%	50%	19%	52%
शुक्र	09/06/2010	12%	31%	9%	69%	0%	83%	69%	53%	41%
सूर्य	09/06/2016	56%	59%	22%	62%	0%	58%	50%	19%	3%
चंद्र	09/06/2026	50%	66%	9%	69%	0%	70%	62%	19%	3%
मंगल	09/06/2033	50%	59%	34%	50%	0%	70%	62%	19%	41%
राहु	09/06/2051	12%	31%	0%	62%	0%	77%	69%	59%	3%
गुरु	09/06/2067	50%	59%	22%	50%	0%	58%	62%	44%	28%
शनि	09/06/2086	12%	31%	0%	69%	0%	77%	75%	53%	3%

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1969-28/04/1971	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

अशुभ
सम
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यय
धन
शत्रु व रोग मुक्ति
व्यावसायिक उन्नति
धनार्जन

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

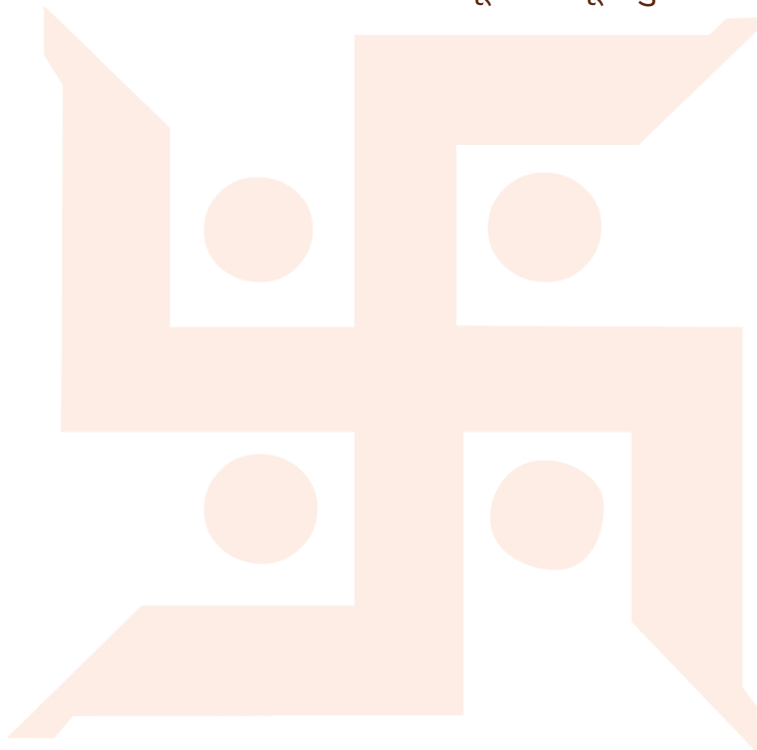
आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है ।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।

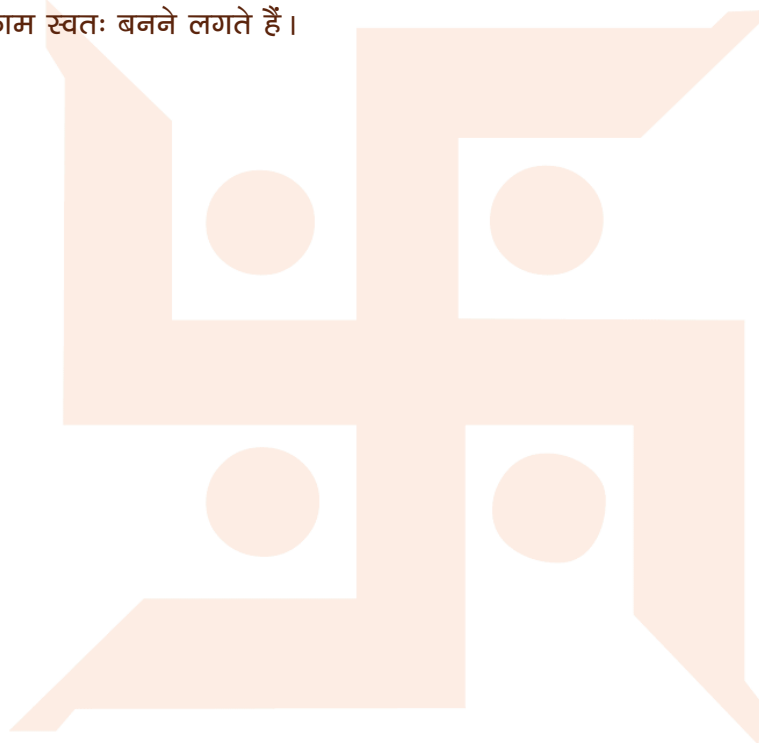
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहयोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी

चंचल एवं उदार होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्म, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, कोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, कूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(09/06/2016 - 09/06/2026)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 09/06/2016 को आरंभ और 09/06/2026 को समाप्त होगी।

चन्द्र एकादश भाव में स्थित है और इसे प्रबल कर रहा है। अतः इस दशा काल में आपका जीवन स्वस्थ, सुखमय, शान्तिपूर्ण तथा समृद्धिशाली रहेगा। चन्द्र के कारण आपकी चहुमुखी प्रगति होगी क्योंकि एकादश भाव समाज, प्रियपात्र, आकांक्षाओं, मनोकामनाओं ओर उनकी पूर्ति, कार्यों में सफलता, आय, समृद्धि और भाग्योदय का प्रतीक है।

स्वास्थ्य :

दशा स्वामि चन्द्र के कारण इस अवधि में आपका जीवन सुखमय, और उत्तम रहेगा। इस दशा में किसी बड़े रोग या दुर्घटना की संभावना नहीं है और आपका जीवन सुखमय व स्वस्थ होगा और आप अपने कार्यों का सम्पादन सामान्य ढंग से अच्छी तरह करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र दशा की अवधि में आप लाभ अर्जित करेंगे जिससे आपका सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सम्पत्तियों और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

व्यावसायिक दृष्टि से भी यह दशा आपके लिए उत्तम रहेगी। आपको अनेक लाभ के संकेत हैं जो इस बात के सूचक हैं कि आप जीवन में बहुत तरक्की करेंगे। यदि आप सेवारत हैं तो पदोन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यवसाय का विस्तार होगा जिससे अपने क्षेत्र व सामाजिक जीवन में और मित्रों के बीच लोकप्रिय होंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए भी उत्तम है। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय होगा और आपको पत्नी, घर, बच्चों तथा सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। आपके सामाजिक क्षेत्र का विस्तार होगा और भाइयों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से परिवार को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यदि आप शैक्षिक-वृत्ति में नहीं हैं तो आपका धर्मग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर झुकाव होगा।



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

महादशा :- मंगल
(09/06/2026 - 09/06/2033)

मंगल की महादशा 09/06/2026 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 09/06/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या दंतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनीकी अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(09/06/2026 - 05/11/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/06/2026 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 09/06/2026 को प्रारंभ होकर 05/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरूरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्च बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यों में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(05/11/2026 - 24/11/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 05/11/2026 को प्रारंभ होकर 24/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुखियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(24/11/2027 - 30/10/2028)**

आपकी मंगल की महादशा 09/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/11/2027 को प्रारंभ होकर 30/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज खत्म होगा। रोज़गार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(30/10/2028 - 08/12/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/06/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/10/2028 को प्रारंभ होकर 08/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। शत्रुओं को परास्त करेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्रा, सौभाग्य और धन का संकेत है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। पिता से संबंध मधुर रहेंगे; संतान से सुख मिलेगा। धन संचित होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है, उससे आय में बढ़त होगी। माता की यात्रा हो सकती है; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा, उन्हें प्रसिद्धि मिलेगी, धन का संचय होगा।

आपकी संतान के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा, लघु यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(08/12/2029 - 06/12/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 08/12/2029 को प्रारंभ होकर 06/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। आपको उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपको किसी अप्रत्याशित माध्यम जैसे विरासत, उपहार आदि से धन मिल सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। अगर आप सेवानिवृत्त हो रहे हैं तो ग्रेच्युटी आदि से धनागम होगा। जीवन में सब सुख रहेंगे; उत्तम भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी, जिससे फायदा उठाएं।

आपके जीवनसाथी को हर प्रकार का लाभ होगा। आपके पिता के शुभकार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। माता को शेयर आदि में लाभ हो सकता है। भाई-बहनों को उत्तम स्वास्थ्य, सहकर्मियों और मातहतों से सहयोग, उत्तम कार्यालय, प्रोन्नति, सम्मान और लाभ का संकेत है।

आपके संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति का लाभ, प्रसन्नता और कार्यक्षेत्र में उन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो पत्रलेखन बढ़ेगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को हर प्रकार के लाभ होंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली खांसी, सर्दी आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

